ई प्रशासन, ग्रामीण विकास और संचार प्रक्रिया प्रणाली

E-governance, Rural Development and Communication Process System

जनसंचार विषय मे एम. फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र 2014-15

शोधार्थी

दीपिका

2014/05/208/003

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र

(मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ)

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट:- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा- 442005 (महाराष्ट्र) भारत

b&i"kklu] xkeh.k fodkl vkj lpkj ifd;k i.kkyh

?kk'k.kk&i=] iek.k&i=] vkHkkj

v/;k; ,d & fo'k; io"k

- "kk/k leL;k dh i'BHkfe
- "kk/k dk egRo ,o iklfxdrk
- "kk/k ifof/k
- "kk/k dh lhek,

v/;k; nk & oreku lpkj ;x e lkbcj lpkj

- lkbcj le; dk vkxeu vkj foLrkj
- b&i"kklu dh fof"k'Vrk,
- lpuk ik|kfxdh vkj lkbcj lpkj d ie[k {k=
- lkbcj lLdfr vkj b&i"kklu

v/;k; rhu & ub lpkj i.kkyh] b&i"kklu vkj xkeh.k fodkl

- b&i"kklu dh ldYiuk
- Hkkjr e b&i"kklu dk <kpk vkj ic/ku ¼ b&i"kklu] b&dkel vkj b&cfdx ½
- lpuk lpkj ik|kfxdh vkj jk'Vh; fodkl dh uhfr;k
- xkeh.k fodkl d fy, b&i"kklu

v/;k; pkj & xkeh.k {k= e b&i"kklu d f{kfrt

- xkeh.k {k= e b&i"kklu d ie[k {k=
- b&i"kklu ¼ lpkj i.kkyh ,o ifØ;k
- xkeh.k {k= e b&i"kklu dh lHkkouk,
- lcf/kr lpkj dh tfVyrk,

v/;k; ikp & xkeh.k b&lkpkj i.kkyh dk fo"y'k.k

- b&lpkj i.kkyh lcf/kr rF; ldyu
- rF; fo"y'k.k

fu'd'k ,o vko";d l>ko

lnHk&lph
ifjf"k'V

v/;k; ,d & fo'k; io"k

- "kk/k leL;k dh i'BHkfe
- "kk/k dk egRo ,o ikfxdrk
- "kk/k ifof/k
- "kk/k dh lhek,

ई प्रशासन, ग्रामीण विकास और संचार प्रक्रिया प्रणाली

E governance, rural development and communication process system

शोध की पृष्ठ भूमि

भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतंत्र हैं और एक कृषि प्रधान देश होने के नाते यहाँ की जनसंख्या का करीब 75 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण इलाकों मे रहता हैं | ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु भारत सरकार ने राष्ट्रीय ई प्रशासन योजना का निर्माण किया जिसके तहत केंद्रीय, राज्य और क्षेत्रीय स्तर पर आकर सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क

और पासपोर्ट, राज्य स्तर पर भूमि अभिलेख, कृषि और ई जिला, स्थानीय स्तर पर पंचायत और नगर पालिका जैसी संस्था को शामिल को किया| ई प्रशासन ऐसी सूचना एवं प्रोद्योगिकी का नाम है जिसका उद्देश्य सूचना और सेवा वितरण मे सुधार लाना,निर्णय करने की प्रक्रिया मे नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देना और सरकार को अधिक जवाबदेही पारदर्शी और सक्षम बनाना है | मार्च 2014 तक जुटाये गए आंकड़ों के मुताबित भारत के करीब 15 करोड़ लोग इन्टरनेट से जुड़े है शहरों मे रहने वाले 20 फीसदी भारतीय इन्टरनेट से जुड़े है वहीं ग्रामीण भारत मे यही आंकड़ा महज तीन फीसदी ही हैं | लेकिन आज 21वीं सदी के इन्टरनेट युग मे हम दस्तक दे चुके है जहां सूचना और तकनीक से दूर रहना बड़ी भूल होगी |

ई गवर्नेंस को लेकर मैंने अपने शोध मे ग्रामीण विकास मे ई प्रशासन को संचार प्रक्रिया प्रणाली के माध्यम से किस तरह पहुचाया जा रहा है यह पता लगाने की कोशिश की है | मैंने सबसे पहले साइबर समय का आगमन किस प्रकार और किस उद्देश्य के लिए किया गया उसमे कौन कौन से साधन आए जिससे लोगो को सूचना मिल सके इस पर अध्ययन किया | उसी के साथ इन साधनों के आने के बाद ये ई प्रशासन के लिए कितने लाभप्रद साबित हुए और कैसे काम करना शुरू किया इसे जाना और लिखने की कोशिश की है |

ई प्रशासन कितना विशिष्ट है और क्या वे अपने काम मे खरा उतर पा रहा है,सूचना प्रोद्योगिकी के आने से साइबर संचार मे किन किन क्षेत्रों मे विकास हुआ यह जानने की कोशिश की है| साइबर संचार मे मोबाइल फोन, आईफोन,लैपटॉप कंप्यूटर आने से किस प्रकार लगातार एक नई लहर सी आई | वह ई प्रशासन मे किस तरह अपनी भूमिका निभा रहा है इसे जानने का पूरा प्रयास इस लघु शोध प्रबंध मे किया गया है| सूचना प्रोद्योगिकी और साइबर संचार मे भिन्न भिन्न प्रकार के साधन आने से कुछ अलग बदलाव भी देखने को मिलते है | इसी अध्याय के अंत मे मैंने साइबर संस्कृति और ई प्रशासन को जोड़ कर देखा जिसमे साइबर संस्कृति जैसे स्मार्ट फोन,लैपटॉप,आईफोन,जो मानव संसाधन, जीवन शैली को धीरे धीरे बदल रहा है और ई प्रशासन को भी सकारात्मक दिशा मे ले जाता हुआ प्रतीत होता है|

आज साइबर संस्कृति ने धीरे धीरे हर चीज को एक अच्छे रूप मे परिवर्तित करने की कोशिश की है| तीसरे अध्याय मे मैंने ई प्रशासन की संकल्पना को परिभाषित किया ई प्रशासन की स्थापना किन कारणों से हुईइसकी जरूरत क्यो है इसका ढांचा और प्रबन्धन को बताते हुए ई प्रशासन, ई कॉमर्स और ई बैंकिंग जैसी सुविधाओं को विस्तार देने की कोशिश की है| वही सूचना संचार प्रोद्योगिकी किस तरह ई प्रशासन के लिए लगातार एक अच्छी

सुविधा प्रदान कर रहा है और राष्ट्रीय विकास की नीतियाँ इसमे अपनी भूमिका किस तरह निभा रही है इसे भी बताने की पूरा जोर कोशिश की है |

चौथे अध्याय मे मैंने ग्रामीण क्षेत्र मे ई प्रशासन के प्रमुख क्षेत्रो को विस्तार से बताया है जिससे ग्रामीण भारत की जनता इसका लाभ कैसे उठा पा रही है इसे भी बताने की कोशिश की है | इसी अध्याय मे ई प्रशासन की संचार प्रणाली का अध्ययन किया जिसमे संचार के माध्यमों से किस प्रकार ई प्रशासन की प्रक्रिया चल रही है और किस प्रकार वह सूचना को संचार के माध्यम से पहुंचा पा रहा है | ई प्रशासन मे संचार प्रणाली किस हद तक अपनी भूमिका अदा कर पा रहा है इसे भी बताया गया है | संचार प्रणाली के माध्यम से ई प्रशासन सुविधा ग्रामीण क्षेत्रों मे पहुँच रही है व संचार प्रक्रिया के माध्यम से लोगो को इस सूचना की जानकारी मिल पा रही है ग्रामीण क्षेत्रों मे संबन्धित संचार मे किस तरह की जटिलताए सामने आती है इसे भी बताने का पूरा ख्याल रखा गया है जिसमे बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए ई प्रशासन कितना आवश्यक है और इसके प्रयोग मे कितना लाभ है | भविष्य मे इसकी क्या भूमिका हो सकती है इसे भी बताया गया है |

ई प्राशासन योजना मे चल रही गतिविधियों को संचार माध्यम से किस तरह ग्रामीण क्षेत्रों मे विकास हो रहा है या विकास होने कि संभावनाएं है ई प्राशासन अपनी योजनाओं को सही ढंग से लोगो तक पहुंचा पाने कितना समर्थ रहा है इसे भी जानने की कोशिश की गयी है |

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे अंतर्वस्तु विश्लेषण तथा प्रश्नावली पद्धति का प्रयोग किया गया है | सम्पूर्ण भारत मे ई प्रशासन को लेकर कहा क्या कौन सी योजनाएँ चल रही है उनकी स्थिति तथा ग्रामीण भारत पर पड़ने वाले प्रभावों को अंतर्वस्तु विश्लेषण के जरिये जानने की कोशिश कि गयी है तथा शोध प्रबंध हेतु चयनित शोध क्षेत्र (उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले के ग्राम बक्शी का तालाब) मे 100 लोगो से कंविनियन्स सैंपलिंग के जरिये प्रश्नावली भरवाई गयी जिनका निष्कर्ष पांचवें अध्याय मे पूर्णत: दिया गया है |

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे शोध निष्कर्ष उपसंहार तथा संदर्भ सूची संलग्न है |

साहित्य का पुनरावलोकन

1. **ई प्रशासन सरकार और नागरिकों के मध्य सेतु का कार्य करता है|**

(https://sites.sas.upenn.edu/business-hindi/book/e-administration-rural-environment)

10 अक्तूबर 2014 समय : 11:40 pm

ई-प्रशासन सरकार एवं नागरिकों के मध्य सम्पर्क-सेतु का कार्य करता है, इसके माध्यम से शासन की नीतियां, कार्य योजनाएं और महत्वपूर्ण सूचनाएं सीधे आम जनता तक पहुंचती हैं। सूचना संचार प्रौद्योगिकी के द्वारा भारतीय आर्थिक जगत को गति मिली है। ई-प्रशासन के लिए भारत सरकार अरबों रुपए व्यय कर रही है, महज़ इसलिए कि ग्रामीण भारत के निर्धन लोगों को उनकी निर्धनता, निरक्षरता, कुपोषण, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं से निजात मिल सके। इस सन्दर्भ में ई-प्रशासन काफ़ी हद तक कारगर साबित हुआ है। ग्रामीण भारत में जो सकारात्मक विकास एवं परिवर्तन हो रहे हैं, उसमें ई-प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

लेखक बता रहे है की भारत में ई-प्रशासन से लाभ को दो रूपों में देखा जा सकता है - आर्थिक लाभ और सामाजिक लाभ। आमतौर पर ग्रामीण वर्ग के युवाओं को रोजगार देकर, किसानों को उनकी उपज की बेहतर कीमत देकर और उत्पादन में आई कमी को रोक कर आर्थिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत ग्रामीण भारतीय किसान ई-प्रशासन का ज्ञान प्राप्त कर कृषि, स्वास्थ्य, मौसम का पूर्वानुमान, फसल-प्रणाली, शिक्षा, वित्त एवं बीमा और सरकारी निर्णय प्रक्रिया में नागरिकों की भागीदारी आदि की जानकारी से लाभ प्राप्त करता है।

2. **(**http://wwwchangeindia.blogspot.in/2014/09/rural-development-foundation-india.html**) 10 जुलाई 2015 समय : 10:40 pm**

इस इन्टरनेट लिंक मे सूचना संचार प्रोद्योगिकी के कुछ उदाहरणों को विस्तार से बताया गया है|

I. **ई- चौपाल-** इसकी स्थापना जून 2000 में आईसीटी के कृषि व्यवसाय प्रभाग ने की थी। इस परियोजना से 8 राज्यों मध्यप्रदेश), महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश और उत्तराखण्ड (

में फैली अपनी6,500 गुमटियों के माध्यम से 40 हजार से भी अधिक गांवों के 40 लाख से अधिक किसानों ने लाभ उठाया है।

II. इसके अलावा जागृति जिसका शुभारंभ मार्च 2003 में हुआ। यह ग्रामीण क्षेत्रों के कृषि, वित्त, यात्रा और ईमेल को घर तक पहुंचाने -सेवा तक सूचना प्रदान करती है। इसके माध्यम से ई-प्रशासन से लेकर संचास- का काम भी होता है। प्रत्येक केन्द्र लगभग30 हजार लोगों की सेवा करता है। इस परियोजना का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य करीब 1,000 ग्रामीण युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार प्रदान करना भी है।

III. इसके साथ ही ई उत्तरांचल परियोजना का उद्देश्य उत्तराखंड राज्य के लोगों को एक दूसरे के निकट - लाना है ताकि वे संस्कृति, परंपरा,समाचार और पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे पूर्वजों के विचारों के बारे में अपनी राय का आदान प्रदान कर सकें। इस वेबसाइट पर बड़े शहरों के साथ साथ छोटे गांवों की बैठकें भी आयोजित की जा सकती है। दूरदराज़ के गांवों में 'जनजागरण सभाएं' आयोजित की जाती है। और उत्तराखंड के लोगो को पूरे देश और समस्त विश्व से जुड़ सकेंगे |

IV. **टेली मेडिसिन**मीण भारत के लाखों लोगों को अपोलो अस्पताल इस परियोजना के माध्यम से ग्रा - मेडिसिन का तात्पर्य डॉक्टरों से दूर -उच्चस्तरीय विशेषज्ञता वाली स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करता है। टेली रहने वाले मरीजों को स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करने के लिए आईइनफ़ार्मेशन कम्युनिकेशन) .टी.सी. का उपयोग करना है। (टेकनालोजी'मेडइंटेग्रा-' सॉफ्टवेयर का उपयोग कर मरीज और विशेषज्ञ डॉक्टर एक दूसरे को देखते हुए बातचीत कर सकते है।

V. **आकाश गंगा**यह परियोजना गुजरात की डेयरी सहकारी समिति चला र - ही है। जिसमे डिस्क के उपयोग के जरिये दूध व्यवसाय के उपयोग के जरिए (डेयरी सूचना सेवा में कियोस्क - .के.एस.आई.डी) का .टी.सी.के सभी कार्यों को एक साथ जोड़कर ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों की सहायता के लिए आई उपयोग किया जाता है। आकाशगंगा से गुजरात सहित8 राज्यों के 34 जिलों में 1000 से अधिक गांवों के करीब 2 लाख लोग लाभ उठा रहे है।

आंध्र प्रादेश सरकार ने ई सेवा परियोजना से माध्यम से आम नागरिकों की भागीदारी को बढ़ाने का कार्य शुरू किया है और कर्नाटक सरकार ने भूमि नाम की की ई-प्रशासन परियोजना जिसके तहत राज्य में 200 कियोस्क के जरिए 67 लाख किसानों के 2 करोड़ से अधिक ग्रामीण भूमि संबंधी दस्तावेजों को ऑनलाइन किया है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त अनेक दूसरे माध्यम भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं।

3. ई प्रशासन से उभर रही है नई संस्कृति

(http://hindi.indiawaterportal.org/node/47895) 10 जनवरी 2015 समय : 11:40 pm

ई-प्रशासन से नागरिक सेवा और ग्रामीण विकास को लेकर नई कार्य संस्कृति विकसित हुई है। इसका स्वरूप आने वाले दिनों में और स्पष्ट एवं ठोस होगा। विकास के स्मार्ट और नए मॉडल में इसका कोई विकल्प भी नहीं है। चाहे पंचायती राज संस्थान हों या सचिवालय, सब की इस पर निर्भरता बढ़ेगी। ठीक वैसे ही जैसे आम जीवन में नई तकनीकों पर आधारित उपभोक्ता जरूरत की चीजों ने खुद की अनिवार्यता सिद्ध की है। इसलिए सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में इसे लेकर प्रयोग और कार्यान्वयन का दौर जारी है। इस आलेख मे लेखक ने बताया कि ई प्रशासन से नागरिक सेवा और ग्रामीण विकास को लेकर नई कार्य संस्कृति विकसित हुई है पंचायती राज संस्थान हो या सचिवालय सब की इस पर निर्भरता बढ़ेगी | आम जीवन में नई तकनीकों पर आधारित उपभोक्ता जरूरत कि चीजों ने खुद कि अनिवार्यता सिद्ध की है |

I. ई प्रशासन के समक्ष चुनौतियाँ

ई-प्रशासन से नागरिक सेवा और ग्रामीण विकास की नई कार्य संस्कृति विकसित हो रही है। इससे सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में उम्मीदें भी अधिक हैं, लेकिन इसके सफल कार्यान्यवयन में कई चुनौतियां भी है। खासकर बिहार जैसे राज्य में अब तक अनुभव यही बताते हैं। इसमे लेखक ने कई चुनौतियाँ को बताया है जिसमें परियोजनाओं कि पहचान और प्राथमिकताओं का निर्धारण न होना, सभी भौगोलिक क्षेत्रों में एक फ़िक्स्ड लैंड लाइन नेटवर्क का उपयोग करना मुश्किल होता है साथ ही डिजिटल डिवाइस कि समस्या उत्पन्न हो रही है | इन्टरनेट कि धीमी रफ्तार जिससे ग्रामीण क्षेत्रों मे कई प्रकार की समस्या उत्पन्न है | चुनौतियों में एक जो विशेष है वह भाषा संबंधी चुनौती अर्थात हिन्दी,अँग्रेजी को छोडकर अन्य स्थानीय भाषा मे उपलब्ध नहीं होना जिसके कारण विभिन्न प्रकार कि समस्या उत्पन्न हहोती है| ई प्रशासन का क्रियान्वयन पंचायत स्तर हो सूचना और संचार प्रोद्योगिकी का लाभ प्रात्येक गाँव को मिले सके | इसके साथ साथ सरकार द्वारा किए जा रहे सरकारी प्रयास और लाभ दोनों को बताया है |

4. बिहार में ईप्रशासन का विकास एवं संभावनाएं-, पंचायतनामा, पटना, 18-24 अगस्त 2014
http://hindi.indiawaterportal.org/node/48068

10 जनवरी 2015 समय : 11:40 pm

ई प्रशासन ने बिहार के कई पंचायत एवं गाँव सूचना प्रोद्योगिकी के एक नया आयाम से जोड़ा है | फरवरी 2014 में ई बिहार का आयोजन किया जिसमें ग्रामीण विकास एवं प्रशासनिक सुधार के लिए सूचना प्रोद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई परियोजना को उद्घाटित किया गया था | प्रोद्योगिकी के विकास के साथ ई प्रशासन सेवाओं का दायरा और गहराई से विस्तारित हुआ | लेखक ने बताया है कि ई प्रशासन के क्षेत्र में बिहार के कई आयाम गढ़ा जिसमें जानकारी कॉल सेंटर जो बिहार सरकार ने सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत आम

जनता को सूचना उपलब्ध कराया जा सके | इसके अलावा ई डिस्ट्रिक्ट योजना के तहत सॉफ्टवेयर के माध्यम से लोक सेवाओं को एक ही जगह निस्पदित करने का काम किया जा रहा है जिसमें केंद्र सरकार द्वारा पलट परियोजना के रूप मे चार जिलो जिसमे गया,औरंगाबाद, मधुबनी,और नवादा में लागू किया गया है | वैट मैनेजमेंट इन्फोर्मेशन सुविधा योजना के तरह वैट मैनेजमेंट इन्फोर्मेशन सिस्टम सॉफ्टवेयर का प्रयोग व्यवसायियों को लोन सेवा प्रदान किया जा रहा है | इसके तहत तत्काल रोड परमिट, ई- रिटर्न एवं ई-भुगतान आदि का ऑनलाइन सेवा प्रदान किया जा रहा है |

5. ईप्रशासन से गांवों का बदलता स्वरूप-

http://hindi.indiawaterportal.org/node/47803

पंचायतनामा, 04-10 अगस्त 2014, पटना

ई-प्रशासन से गांवों का स्वरूप तेजी से बदला है। इसने आम आदमी की भी पहुंच को सरकार और उसकी गतिविधियों तक सुनिश्चित की है। अब गांव का एक युवक घर बैठे देश-विदेश की सेवाएं प्राप्त कर रहा है। चाहे रेल टिकट हो या आरक्षण की स्थिति जानना, किसी परीक्षा का फॉर्म भरना हो या परिणाम का पता लगाना, जन्म, आयु, आवासीय और जातीय प्रमाण-पत्र बनवाना हो या टैक्स जमा करना, ई-सेवा से यह सब उनके लिए आसान हुआ है। अभी ई-प्रशासन को और प्रभावी बनाने की जरूरत है, लेकिन जो सेवाएं मिल रही हैं, वे तेजी से गांवों को बदल रही हैं।ई-प्रशासन का अर्थ सरकारी कामकाज में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करना है, ताकि शासन सरल, नैतिक, उत्तरदायी और जवाबदेह बन सके। इसके माध्यम से सरकार और आम जनता के बीच इंटरनेट या कंप्यूटर नेटवर्क के जरिए सुरक्षित, विश्वसनीय और नियंत्रित संपर्क कायम करने का प्रयास किया जाता है।

I. ईप्रशासन की शुरुआत-

भारत में ई-प्रशासन की वास्तविक शुरुआत राष्ट्रीय सूचना केंद्र अर्थात एनआइसी की स्थापना (1976) से माना जा सकता है। उल्लेखनीय है कि एनआइसी की स्थापना संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और भारतीय इलेक्ट्रॉनिक आयोग के सहयोग से हुआ था। एनआइसी ने ही सर्वप्रथम देश के जिलों को इलेक्ट्रॉनिक तरीकों से आपस में जोड़ने का काम किया। इसके बाद से रेलवे, चिकित्सा, शिक्षा एवं भूमि संलेखन आदि को जोड़ने का काम किया गया और सफल भी रहा। इस सफलता को ध्यान में रखते हुए सरकार ने 1990 के दशक में ई-सरकार कार्यक्रम की शुरुआत की। इसी के तहत 15 अगस्त 2000 को केंद्र एवं राज्य सरकार के कार्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए ई-सरकार केंद्र की स्थापना की गई थी। इसके बाद 2006 में राष्ट्रीय ई-प्रशासन योजना आरंभ की गई। तब से लेकर अब तक इसके लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। कॉमन सर्विस सेंटर भी उसी में से एक है।

साथ ही लेखक कहते है कि आखिर ई-प्रशासन की आवश्यकता क्यों पड़ी ? कारण अनेक जिनको लेखक ने भिन्न भिन्न प्रकार से बताया है

वर्तमान में भारत में गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार आदि की समस्या के साथ-साथ कई ऐसे कारण हैं, जिससे ई-प्रशासन की जरूरत पड़ी। ये कारण हैं| सरकारी काम काजों में पारदर्शिता लाना,प्रशासनिक प्रभावित में सुधार लाना, सरकारी कार्यों के लागत में कमी लाना, बिचौलियों को खत्म करना, सरकार के उत्तरदायित्व और क्षमता में वृद्धि करना, सरकार और नागरिकों के निर्णय प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार लाना, सूचना, संचार एवं नेटवर्क आधारित समुदाय की रचना करना तथा गरीबी, बेरोजगार, निरक्षरता में कमी लाने के साथ ही भ्रष्टाचार को खत्म करना।

II. लेखक ने ई प्रशासन के उद्देश्य को भी बताया-है

ईप्रशासन का उद्देश्य बिल्कुल साफ है। इसके जरिए आम नागरिकों को बेहतर शासन एवं सेवा-उपलब्ध कराना, शासन के कार्य प्रणाली एवं उसके पारदर्शिता में सुधार, जवाबदेही का विकसत, नागरिकों का सशक्तीकरण, सरकार द्वारा दी जा रही सेवाओं की लागत एवं समय कम को करना, सरकारी संगठनों, विभागों एवं कार्यालय के बीच संचार के माध्यम से समन्वय स्थापित करना शासन का मकसद है। इसके जरिए सरकार और जनता के बीच बढ़ती खाई पाटी जा सकती है।

III. ई प्रशासन मे क्या क्या है शामिल

ई-प्रशासन में इसके उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को देखते हुए जिन गतिविधियों को इसमें शामिल किया गया है, उनमें नौकरशाही एवं शासन की गुणवत्ता में सुधार, ज्ञान की भागीदारी, सामाजिक सूचना की आॅनलाइन उपलब्धता तथा टेक्निकल संसाधनों का विकास एवं विस्तार शामिल है। इसके जरिये सरकारी कामकाज की निगरानी एवं एवं उनका मूल्यांकन किया जाता है। कानूनी कार्यवाही, जमीन के रिकॉर्ड, सरकारी कार्यालयों आदि के कार्यों का कंप्यूटरीकरण भी इसमें शामिल है। इसके जरिए जिलों को राज्य मुख्यालय से सीधे संपर्क में लाया गया है। सामाजिक सेवा में भूमिका में सुधार का भी बड़ा माध्यम है। उल्लेखनीय है कि इन सब बातों के लिए 12वीं पंचवर्षीय योजना में सुशासन को बढ़ावा देने, सेवा की क्षमता को बढ़ाने तथा दी जानेवाली सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाने का लक्ष्य रखा गया।

IV. ई प्रशासन के स्तंभ-

ई-प्रशासन के चार स्तंभ होते हैं : पहला नागरिक, व्यापारिक एवं अन्य प्रतिष्ठान, दूसरा टेक्नोलॉजी, तीसरा संसाधनों का समुचित उपयोग और चौथा प्रक्रिया। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इसे ठीक से लागू किया जाए। इसने गांवों के स्वरूप को भी बदला है। यह बदलाव इस तरह आया है कि सरकारी कामकाज के तरीकों, प्रक्रियाओं और संगठन को नए सिरे से पुनर्गठित किया गया। विभागों एवं संगठनों के बीच सूचना एवं संचार टेक्नोलॉजी का व्यवहार बढ़ा। इसके लिए अलग से कानूनी रूपरेखा तैयार की गई है।

V. ईप्रशासन ने डाला प्रभाव -

वर्तमान में ई- प्रशासन समय की मांग है। इसकी प्रक्रिया से प्रशासनिक व्यवस्था में काफी बदलाव आया है। पंचायत, गांव और ग्रामीण समाज को काफी लाभ मिला है।

VI. इसे हम इस तरह देख सकते हैं :

आम जनता अपने अधिकारों के प्रति ज्यादा जागरूक हुई है, पहले की तुलना में सरकार से जनता की अपेक्षाएं बढ़ी हैं, लोग अब सरकार के कामकाज पर पैनी नजर रखने लगे हैं, सरकार भी सामाजिक क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा व्यय कर रही है, आम नागरिक अब आसानी से सरकारी विभागों के संपर्क में है, पिछड़े राज्यों में समन्वय की कमी और नीतिगत खामियां दूर हुईं, शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर बढ़े है, सरकार द्वारा ई-मित्र कियोस्क के जरिए रोजगार उपलब्ध कराने जा रही है,कंप्यूटर प्रशिक्षण, साइबर कैफे एवं मोबाइल मैकेनिक के रूप में कैरियर संवारने के लिए युवाओं को सरकार आसान किस्त पर ऋण दे रही है।

6. मध्यप्रदेश में ज्ञानदूत परियोजना

http://www.archive.india.gov.in/hindi/citizen/graminbharat/graminbharat.php?id=20 **25 मार्च 2015 समय : 10:00 pm**

ज्ञानदूत एक इंट्रानेट आधारित सरकार द्वारा नागरिकों (जीटूसी) को सेवा प्रदान करने की पहल है। यह मध्यप्रदेश के धार जिले में जनवरी 2000 में ग्रामीण आबादी के लिए प्रासंगिक जानकारी प्रदान करने और जिला प्रशासन व लोगों के बीच एक अंतरफलक स्थापित करने के दोहरे उद्देश्य के साथ शुरू की गई थी।

ज्ञानदूत नेटवर्क के माध्यम से दी जाने वाली सेवाएं:

क. दैनिक कृषि पण्य वस्तु दरें (मंडी भाव)
ख. आय प्रमाण पत्र
ग. अधिवास प्रमाण पत्र
घ. जाति प्रमाण पत्र
ङ. लोक शिकायत निवारण
च. ग्रामीण हिन्दी ईमेल
छ. बीपीएल परिवार सूची
ज. ग्रामीण हिन्दी समाचार पत्र

VII. राजस्थान में ई मित्र-परियोजना

यह ई-शासन की पहल वर्ष 2002 में प्रारंभ की गई लोकमित्र और जनमित्र प्रायोगिक परियोजनाओं के अनुभवों पर आधारित है। जबकि लोकमित्र जयपुर शहर में केंद्रित था, जनमित्र का प्रयोग शहरी और ग्रामीण जनसंख्या को एक स्थान में ही सूचना और सेवाएं प्रदान करने के लिए झालावाड़ जिले में किया गया था। ई-मित्र(बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) पीपीपी मॉडल (सरकारी निजी भागीदारी) का प्रयोग करते हुए सभी 32 जिलों में इन दोनों परियोजनाओं का एकीकरण है।

इसमें दो मुख्य संघटक- बैक ऑफिस प्रसंस्करण और सेवा काउंटर हैं। बैक ऑफिस प्रसंस्करण में भागीदार विभागों का कम्प्यूटरीकरण और जिला स्तर पर लघु आंकड़ा केंद्र (ई-मित्र आंकड़ा केंद्र) के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी समर्थ हब स्थापित करना शामिल है।

VIII. आंध्र प्रदेश में ईसेवा-

यह परियोजना सरकार से नागरिकों को और ई-व्यवसाय से नागरिकों को सेवाएं प्रदान करने के लिए तैयार की गई है। मूल रूप से इसे ट्विन्स (ट्विन सिटी इंटीग्रेटेड नेटवर्क सर्विसेज) परियोजना के रूप में हैदराबाद और सिकन्दराबाद के युग्म शहरों में वर्ष 1999 में कार्यान्वित किया गया था। ई-सेवा परियोजना(बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडों में खुलती हैं) की विशिष्ट बातें यह हैं कि सभी सेवाएं उपभोक्ताओं/नागरिकों को संबंधित सरकारी विभागों से जोड़ते हुए और सेवा सुपुर्दगी स्थल में ऑनलाइन सूचना प्रदान करके ऑनलाइन सुपुर्द की जाती हैं। नेटवर्क संरचना व्यापक क्षेत्र नेटवर्क (डब्ल्यूएएन) पर एक इंट्रानेट के रूप में तैयार की गई है।

IX. महाराष्ट्र में समन्वित नागरिक सेवा केंद्र सेतु

सूचना प्रौद्योगिकी के लाभों को उपयोग में लाकर प्रशासन के क्रियाकलापों को प्रभावी और पारदर्शी बनाना महाराष्ट्र सरकार की सूचना प्रौद्योगिकी नीति के मुख्य केंद्र बिंदुओं में से एक है। सूचना प्रौद्योगिकी इस नियमित पारस्परिक क्रिया को और अधिक तेज, सक्षम और पारदर्शी बनाती है।

7. ग्रामीण इलाकों में ईप्रशासन-

http://dprcg.gov.in/lekh%20harsha%20mam-11.08.11 **28 जनवरी 2015 समय : 11:40 pm**

ई-प्रशासन पर जेहां हम तकनिकी , बजट , योजनायों और संसाधन पर सारा ध्यान केन्द्रित कर रहें हैं और बहस हो रही है वहीँ हमें यह भी देखना है की इसका लाभ उठानेवाली जनता उतनी जागरूक हो रही है खासकर ग्रामीण इलाकों में . भारत में लगभग 72% फीसदी आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है।

I. ग्रामीण क्षेत्रों की मुख्य चुनोतियाँ

विकासशील देशों में महिलायों और बच्चों के प्रति बुनियादी सुविधाएँ - शिक्षा , स्वास्थ्य , जागरूकता और अधिकार अभी भी संतोषजनक नहीं है और इस दिशा में विकास अभी भी बहुत कम ही है. सरकारी संस्थाओं के लंबे चौड़े दावों के बावजूद ग्रामीण भारत शिक्षा, जल वितरण, जीवन प्रत्याशा, बिजली की उपलब्धता जैसे बुनियादी क्षेत्रों में पीछे हैं.

8. भविष्य के क्षितिज पर उभर रहे ई प्रशासन के रंग-

डॉ.चन्द्रकुमार जैन

http://pib.nic.in/newsite/hindirelease.aspx?relid=12963

नागरिक सेवा मुहैया कराने में राज्य की सफलता इस पैमाने पर आंकी जाती है कि सरकारी सेवाओं तक नागरिकों की पहुंच कितनी आसान है ।लेकिन सरकारों के लिए यह मुमकिन नहीं है कि उसके अधिकारी देश के हर नागरिक

तक पहुंच कर उसकी समस्याएं जाने और उनका निवारण करें । इसलिए अपनी सेवाओं को हर नागरिक तक पहुंचाने के लिए दुनिया भर की सरकारें सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक साधनों का इस्तेमाल कर रही हैं ।

यह नई प्रशासनिक व्यवस्था ई-प्रशासन (इलेक्ट्रॉनिक-प्रशासन) व्यवस्था कहलाती है। ई-प्रशासन व्यवस्था भ्रष्टाचार के रोग का कारगर इलाज हो सकती है क्योंकि यह भ्रष्टाचार के कारणों पर सीधा और अचूक असर करेगी।विश्व में कोरिया, चीन, अमेरिका, यूरोप के कई देशों में ई-प्रशासन व्यवस्था कायम की गई है।भारत में ई-प्रशासन का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है ।नेशनल इंफार्मेटिक्स सेंटर (एनआईसी) की स्थापना और रेल टिकटों की ऑनलाइन बुकिंग से यहां इसकी शुरूआत हुई । **Singh(2004): -** ई गवर्नेंस ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिकों को समय पर सूचना उपलब्ध करने की क्षमता रखता है | साथ ही ग्रामीण लोगो के लिए wealth of generation अर्थ भावी पीढ़ी बनाने में भी योगदान देता है |

9. **Malhotra (2006)** आईसीटी)ictजो दूरदराज़ के ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना पहुचाने के साथ साथ उनके (ग्रामीण जीवन स्तर में भी महत्वपूर्ण बदलाव सुझाव लाने का कार्य किया करता है|
10. **1993madenetal** :- ict ग्रामीण लोगो सामाजिक, शैक्षणिक और वाणिज्यिक स्तर में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है |
11. **Singh 2008** इलेक्टोनिक सेवा केंद्र दूरदराज़ एवं विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के कमजोर वर्ग के लिए सूचना का एक प्रमुख साधन के रूप मे निर्णायक की भूमिका निभाता है |
12. **Wilson2000** इनहोने अध्ययन मे यह निष्कर्ष निकाला कि भारत जैसे अर्थव्यवस्था वाले देश में ict सूचना संचार एवं प्रोद्योगिकी , पर्यावरण, प्रशासनिक विकास,मानवअधिकारों को बढ़ावा स्वास्थ्य आदि महत्वपूर्ण आर्थिक विकास मे सहयोग देता है और एक सतत विकास कि अवधारणा को जन्म देता है साथ ही कृषि से संबंधित खाद्यान्त को उचित लागत में विक्री का श्रेय भी है|
13. **Annamalai and rao 2003 :-** इन्होने अपने अध्ययन में यह पाया कि सरकार और ग्रामीणों के सहभागिता में ई गवर्नेंस प्रोजेक्ट इन दोनों के बीच एक सफल माध्यम के रूप में कार्यरत है | इसी मुद्दे पर में संयुक्त राष्ट्र संघ के ई गवर्नेंस सर्वे मे आम लोगो कि भागीदारी पर ज़ोर देते ह 2012ुए कहा गया था की स्थायी विकास के लिए सरकारों के आठ आम जनता भी भी भागीदारी जरूरी है और इसके लिए ई गवर्नेंस इन दोनों के बीच एक पल का काम करती है | अगर जनता को अपनी छोटी से चोटी जानकारी इन्टरनेट के जरिये मिलने लग जाये तो उसे सरकारी दफ्तरों के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे |

14. **हिंदुस्तान अखबार 15/4/30** संचार एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री रवि शंकर प्रसाद ने कहा कि केंद्र सरकार ने गांवों और पंचायतों तक ई क्रांति का लाभ पाहुचने के लिए कार्य शुरू कर दिया है | इसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में चलने वाली केंद्र व राज्यों कि सभी योजनाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराया जाएगा |

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध "ई प्रशासन,ग्रामीण विकास और सांचर प्रक्रिया प्रणाली" विषय पर किया गया है | जिसमे ई प्रशासन से ग्रामीण विकास किन संचार प्रक्रिया के जरिये हो रहा है, यह जानने कि कोशिश की गयी है | इस शोध का प्रथम उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों मे ई प्रशासन का उपयोग कितने प्रतिशत लोग कर रहे है इसके जवाब मे यह पाया गया कि ई प्रशासन की जानकारी 40 फीसदी लोगो को है | वहीं इस शोध का दूसरा उद्देश्य ई प्राशासन कि मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी कितने प्रतिशत लोगो तक है के जवाब मे इस शोध मे पता चला कि सरकार द्वारा भले ही ई प्रशासन जोरों पर हो पर ग्रामीण आज इस तरह की किसी भी सुविधा से अंजान है | तीसरा उद्देश्य ई प्रशासन की रूपरेखा को जानने का था इसमे पाया गया कि आज भारत मे ई प्रशासन को लेकर सरकार ग्रामीण क्षेत्रों को ध्यान मे रखकर उसका प्रछर प्रसार नहीं कर रही जिसकी वजह से ग्रामीण क्षेत्र तक सूचना नहीं पहुंची है | इस शोध का चौथा उद्देश्य केंद्रीय और राज्य स्तर पर ई प्रशासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को जानने को लेकर था इसमे यह पता चला की चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीणों को इसकी जानकारी 50 फीसदी तो है पर इसका लाभ उठाने वालों का प्रतिशत काफी कम है | पांचवें उद्देश्य के अंतर्गत मैंने पाया कि मोबाइल इन्टरनेट जैसी व्यवस्था होने के वावजूद चयनित क्षेत्र के ग्रामीण ई प्रशासन से काफी नदारद थे | हालांकि गाँव के पढे लिखे लोगो मे यह लोकप्रिय दिखा |

प्रस्तुत शोध प्रबंध हेतु कुछ उपकल्पनाए थी जो निष्कर्ष से मिलती जुलती है | ई प्रशासन के द्वारा चल रही योजनाएँ इन्टरनेट के प्रसार से समय कि बचत के साथ ग्रामीण भारत तक पहुँचने मे सक्षम तो है पर भारत मे इन्टरनेट की गति को लेकर अभी काफी प्रयास होने कि जरूरत दिखती है | हालांकि इन्टरनेट की समकालीन स्थिति मे ही ग्रामीण भारत (चयनित क्षेत्र) मे ई प्रशासान का इस्तेमाल करने वाले मानते है कि इससे समय और पैसे दोनों की बचत होती है | भारत मे ई प्रशासन का निर्माण धीरे धीरे हो रहा है जैसे जैसे लोग शिक्षित होंगे सूचना प्रोद्योगिकी से जुड़ेंगे वैसे वैसे ई प्रशासन से लाभान्वित होने वाली संख्या मे इजाफा होना संभव होगा | इस शोध मे यह पाया गया कि अभी ग्रामीण क्षेत्रों मे ई प्रशासन की पहुँच काफी कम है और हालांकि साइबर संस्कृति मे विस्तार होने से लोगो के पास स्मार्टफोन, टैब जैसे नयी प्रोद्योगिकी आने से ई प्रशासन से जुडना पसंद कर रहे है | ई प्रशासन के विस्तार और प्रसार मे साइबर संस्कृति का योगदान सरहनीय माना जा सकता है |

प्रस्तुत शोध मे कुछ प्रश्नों को ग्रामीण क्षेत्र मे पहुंचाया गया जिसमे लोगों ने अपने विवेक के अनुसार उत्तर दिये | ग्रामीण भारत मे मोबाइल की पहुँच 70 फीसदी तक पहुँच चुका है वही कंप्यूटर लैपटॉप और आईफोन के उपयोग का अनुमानित आंकड़ा 10 फीसदी के करीब हैं | मोबाइल मे इन्टरनेट का इस्तेमाल करने वालो कि संख्या भले ही ज्यादा है पर वे इन्टरनेट का इस्तेमाल सोसल साइट्स के लिए ज्यादा करते पाये गए ना कि ई प्रशासन का | चयनित क्षेत्र मे ई प्रशासन को लेकर लोगों में जागरूकता का जहां सवाल है तो लोग ई प्रशासन को जान तो रहे है पर पर इसका प्रतिशत काफी कम है या फिर कहे कि ई प्रशासन के प्रचार प्रसार की कमी महसूस की गयी | इस शोध मे प्रश्नावली के प्रश्न मे लोगो से जानने की कोशिश की की वह इन्टरनेट का प्रयोग किन चीजों के लिए करते हैं तो ज़्यादातर लोगो ने सोशल मीडिया को लेकर अपनी राय दी | हालांकि व्यक्तिगत कार्यों के लिए भी लोग इन्टरनेट का प्रयोग करते अपपाए गए हैं |

अगले प्रश्न मे यह जाने की कोशिश की गयी की क्या वे ई प्रशासन के बारे मे जानते हैं तो 4 0 फीसदी लोग ई प्रशासन को जानने की बात स्वीकार्य करते हैं तथा अन्य लोगो ने इसे सिरे से नकार दिया | अगले प्रश्न मे उत्तरदाताओं से उनके किन किन ई गवर्नेंस अनुक्रम मे शामिल होने को लेकर सवाल किए गए तो पता चला कि ई बैंकिंग और ई कॉमर्स को 50 फीसदी लोगो ने इसे अपना प्रमुख अनुक्रम बताया |वहीं ग्रामीण क्षेत्रों मे स्थापित ई पंचायत को चयनित क्षेत्र मे 90 फीसदी उत्तरदाता जानते हाइन और इस्तेमाल मे ला रहे हैं | इस शोध प्रबंध के लिए उत्तरदाताओं से पूछा गया कि ई प्रशासन के द्वारा क्या क्या संभव हैं तो उन्होने व्यवस्था और कुशल प्रबंधन, समय की बचत तथा कार्य की सरलता तीनों को बताया हालांकि 20 फीसदी लोग इन तीनों संभावनाओं को नकारते भी पाये गए | आखिरी मे ग्रामीणों से पूछा गया कि ई प्रशासन से ग्रामीण विकास किस तरह संभव हो सकता हैं तो लोगो ने ई प्रशासन को पूरी तरह ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बनाए जाने, सूचना प्रोद्योगिकी को ग्रामीण क्षेत्रों से जोड़े जाने तथा नई सरकारी नीतियाँ बनाए जाने को लेकर अपने मत दिये |

प्रस्तुत शोध मे अपने प्रश्नों के माध्यम मे यह जानने कि कोशिश की कि क्या ग्रामीण क्षेत्र के लोग ई प्रशासन सुविधा का लाभ उठा पा रहे हैं या ई प्रशासन कि योजनाओं का लाभ उठा पा रहे हैं ? तो पता चला कि 40 प्रतिशल लोग ई प्रशासन के बारे मे जानते हैं | ग्रामीण क्षेत्र का शिक्षित वर्ग जो ई प्रशासन के बारे मे जानता भी हैं और उनकी योजनाओं का लाभ भी उठा पा रहा हैं | ग्रामीण क्षेत्रों मे मोबाइल इन्टरनेट का ज़्यादातर प्रयोग होता हैं और और ई प्रशासन का भी एक सशक्त माध्यम बन कर उभर रहा हैं | ई प्रशासन ने अपना प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों तक

कर लिया हैं किन्तु उसे प्रचारित और फैलाव का काम संचार प्रणाली कर रही हैं | जैसे कि मोबाइल ,कंप्यूटर आई फोन इत्यादि के माध्यम से ई प्रशासन का प्रयोग |

प्रस्तुत शोध मे पाया गया कि ई प्रशासन को ग्रामीण क्षेत्रों मे संचार प्रणाली के माध्यम से पहुचाने के लिए सरकार को अभी कई ठोस प्रयास करने होंगे | आज भी ग्रामीण क्षेत्र के लोग ई प्रशासन का लाभ मात्र भर ही उठा पा रहे हैं | हालांकि संचार माध्यमों का उपयोग दिन पर दिन बढ़ता जा रहा हैं | ई प्रशासन को अच्छही तरह प्रचारित संचारित तथा लाभप्रद बनाने के लिए सरकार को नई नीतियाँ बनाने की जरूरत हैं |